BA Part III (H)
Paper V

Dr. Chiranjeev K. Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

2020-7-16 15:25

Lecture VIII

नातेदारी की शैलियां -

2. परिहास या हँसी-मजाक के सम्बन्ध - परिहास के अन्तर्गत दो नातेदारों में परस्पर हँसी-मजाक, गाली गलौज, यौन सम्बन्धी अश्लील और भद्दे वचन, एक दूसरे की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाना आदि का सम्बन्ध देखा होता है। इस प्रकार के सम्बन्ध प्रमुखतया विवाह सम्बन्धियों के बीच पाये जाते हैं। ये सम्बन्ध निम्न प्रकार के नातेदारों के बीच पाये जाते हैं- जीजा-साली जीजा-साला, देवर-भाभी परिहास, ननद-भाभी परिहास मामा - भांजा परिहास, मामी - भानजा परिहास, दादा-पोती, दादी-पोता परिहास, चाचा-भतीजा, बुआ - भतीजी परिहास आदि। जहां हमारी जनजाति में खुले रूप से भांजा-मामी के बीच परिहास सम्बन्ध की रीति प्रचलित है, वहीं ओरांव व बैगा जनजाति में दादा-पोती और दादा-पोती के बीच परिहास सम्बन्ध पाया जाता है।

8. माध्यमिक या अनुनामिता सम्बोधन - अनुनामिता का अंग्रेजी शब्द टैक्नोनिमी ग्रीक भाषा से बना है। इसे समाज विज्ञान में सर्वप्रथम लाने का श्रेय ई. बी. टायलर को है। कई समाजों में ऐसे नियम हैं जहां सम्बन्धी को उसके नाम से पुकारना मना है। उसके पुकारने के लिए किसी अन्य व्यक्ति को माध्यम बनाया जाता है, इसलिए इसे माध्यमिक सम्बोधन कहते हैं। उदाहरण के लिए भारतीय समाज में एक स्त्री अपने पति को पुकारने के लिए पुत्र या पुत्री का नाम लेकर पुकारती है जैसे अमुक के पिताजी या अमुक की मां आदि।